International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 10, Issue 2, Feb 2023
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सुमित्रानन्दन पन्त की रचनाओं में नारी–चित्रण

चन्द्रकान्त
व्याख्याता हिन्दी साहित्य
सर्वोदय महिला महाविद्यालय
बागीदौरा, जिला बांसवाडा (राज.)

छायावाद युग तक नारी की स्थिति में बहुत सुधार हो चुका था, उसका महत्व स्पष्ट हो चुका था। उस समय तक नारियों को पवित्रता की दृष्टि से देखा जाने लगा था। एक ऐसी दृष्टि जो नारी के रूप पर केवल विस्मित होना जानती थी। वह नारी के सौन्दर्य को महासौन्दर्य से एकाकार होना मानती थी। अतः छायावाद के कवि नारी रूप को दर्शन तथा चिंतन के धरातल से नीचे लाने के विरूद्ध थे। नारी के विषय में ऐसी ही दृष्टि सुमित्रानन्दन पन्त की भी रही।

कविवर सुमित्रानन्दन पन्त की रचनाओं में नारी की विविध भाव–भंगिमा, क्रिया–प्रतिक्रिया रूप–रंग, भाव–मुद्रा, चिंतनशीलता व प्रेम की सशक्त पीड़ा व विरह की कसमसाहट के दर्शन होते हैं। पन्तजी ने नारी को समस्त भव्य प्रेरणाओं का उद्‌गम माना है, उन्होंने महिलाओं के सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक पक्ष का चित्रण बहुत ही अनुठे ढंग से किया है। उनका वर्णन न केवल अनूठा है, बल्कि उन्होंने नारी जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करते समय एक वास्तविक धरातल भी प्रदान किया है। इस वास्तविकता का चित्रण उन्होनें बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ किया है, उन्होनें नारी को विविध रूपों में देखा जैसे– माँ, पत्नी, प्रेयसी, बालसखा, सहपाठी, कामिनी, बालिका आदि।

जिस प्रकार पंत जी प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर अभिभूत हो जाते है उसी प्रकार उनकी दृष्टि नारी सौन्दर्य की ओर भी आकृष्ट हुई है। प्रकृति की ही भाँति उन्होंने नारी के भी विभिन्न चित्र खीचें हैं। पल्लविनी में संगहित 'ग्रंथि', 'आँसू' और 'नारी रूप शीर्षक कविताएँ पंत

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

के प्रेम और उनकी नारी विषयक मान्यताओं के ज्वलंत दस्तावेज है आँसू शीर्षक कविता में उन्होंने लिखा है –

'वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ।
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।।'

उक्त पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के अनन्त विस्तार में अपनी प्रेम जनित व्यथा को ही व्याप्त चित्रित किया है वायु, बादल, आकाश, इन्द्रधनुष आदि प्रकृति के तमाम उपकरण इनकी विरह वेदना को उद्दीप्त करते है। इस वरदान स्वरूप व्यथा में कल्पना की ऊँची उड़ान क कारण लौकिक प्रेम की यथार्थ भूमि का परित्याग कर पंत की दिव्यता का आदर्श ही अधिक प्रस्तुत हुआ है। अब तक स्त्री को जो निम्न दर्जा प्रदान किया गया था, वह पंत जी को स्वीकार नहीं है वह लिखते है –

''सदाचार की सीमा उसके तन से है निर्धारित,
पूतयोनि वह मूल्य चर्म पर केवल उसका अंकित
अंग–अंग उसका नर के वासना चिन्ह से मुद्रित
वह नर की छाया, इंगित संचालित, चिर पद लुण्ठित।।''
वह समाज की नहीं इकाई – शून्य समान अनिश्चित
उसका जीवन मान–मान रे नर के है अवलम्बित
मुक्ति हृदय वह स्नेह प्रणय कर सकती नहीं प्रदर्शित
दृष्टि, स्पर्श सज्ञा से वह हो जाती सहज कलंकित।।''

अत तक समाज में स्त्री का यही मूल्य आँका जाता था। वह केवल पुरूष की परछाई मात्र हुआ करती थी, परन्तु पन्त जी को यह स्वीकार नहीं था, वह इस परम्परा का विरोध करते है वह कहते हैं कि यदि नारी को नर के समकक्ष देखा जाय तो मानव समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो जाएगा और मानवता की एक नयी संस्कृति का जन्म होगा।

पंत के मतानुसार नारी को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे तो मानव जीवन के विकास का रथ आगे नहीं बढ़ पाएगा। कहीं–कहीं ग्रामीण नारी का वर्णन उन्होंने बड़ी ही तटस्थता से किया है। ग्रामीण नारो के साथ होने वाले इन शोषणों के विरूद्ध सशक्त स्वर छायावादी युग की कविता में सुनाई देते है। ग्राम्य युवती की दयनीय दशा का यथार्थ अंकन पंत जी ने इस प्रकार किया है –

'दुखों में पीस, दुर्दिन में घीस
जर्जर हो जाता उसका तन।
ढह जाता असमय यौवन धन।
बह जाता तट का तिनका
जो लहरों से हँस खेला कुछ क्षण।।'

छायावादी साहित्य नारी को दिव्या के पद पर आसीन अवश्य रखना चाहता था। नारी के अनेक बंधनों में एक बंधन काम भी है और इस बंधन का रूप यह है कि पुरूष नारी की कोमलता पर मुग्ध तथा इस कोमलता और मृदुलता की रक्षा के लिए वह नहीं चाहता कि स्त्रियाँ सचमुच, पुरूषों की समकक्षिणी हो जाएँ क्योंकि ऐसा हुआ तो इसका एक पक्ष होगा आर्थिक स्वाधीनता, जिसके लिए उन्हें कल–कारखानों में काम करना पड़ेगा और अधिक परिश्रम करने से उनकी मृदुलता, सुकुमारता एवं सौन्दर्य नष्ट हो जाएगा।

पंत जी रचनाओं में यदि गद्य साहित्य पर दृष्टि डाली जाये तो उन्होंने अपने गद्य साहित्य में भी स्त्री को ही प्रमुख रखा है। उन्होंने नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है जैसे– माँ, पत्नी, प्रेयसी, बालसखा, सहपाठी, कामिनी, बालिका आदि। इन विविध रूपों में से उन्हान पत्नी के रूप को प्रथम स्थान दिया है। पत्नी ही पुरूष की अर्धांगिनी बन गृहस्थ जीवन को सफल बनाती है। इसका स्पष्ट उदाहरण पंत जी के प्रथम उपन्यास 'हार' में दिखलाई पड़ता है। पति–पत्नी के रिश्ते की आधारशिला प्रेम शब्द में समाहित है अगर जीवन में प्रेम न रहा तो कोई भी सम्बन्ध शेष नहीं रह जाता।

उपन्यास 'हार' में निमेष की पत्नी विजया को आदर्श पत्नी के रूप में वर्णित किया गया है। इस कथा में निमेष अपनी पत्नी विजया को दुत्कार कर सुफला के प्रेमपाश में बंध जाता है। इसी कारण विजया दिन–रात परेशान रहती है। यह सोचकर कि उसका अपराध क्या है वह

रोती रहती है और बार–बार निमेष से क्षमा मांगती है। इस उपन्यास में विजया को लेखक ने एक आदर्श पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया है, क्योंकि विजया अपने पति निमेष के प्रति पूर्णरूप से समर्पित है। वह पतिपरायण सेवा, त्याग की मूर्ति, सास–ससुर की सेवा करने वाली तथा पतिव्रत्य धर्म की साकार प्रतिमूर्ति है। विजया के त्याग एवं समर्पण से निमेष को जीवन की वास्तविकता का भाव होता है और वह अपने कुकृत्यों पर पश्चाताप कर, अपने पापों का प्रायश्चित करता है।

उपन्यास 'हार' एक ऐसी प्रेम कहानी पर आधारित है, जिसमें दो समान्तर प्रेम कथाएँ प्रेम के त्रिकोणात्मक रूप को प्रकट करती हैं। कथा का नायक भविष्य तथा नायिका आशा का प्रेम होना तथा प्रेम की चरम परिणिति विवाह का न हो पाना अर्थात प्रेम रूपी हार (माला) का एक दूसरे के गले में न पड़ना जिससे नायक की प्रेम में हार हो गई, यही इस उपन्यास का मूल है।

कविवर पंत जी की रचनाओं में नारी प्रेम की प्यासी और अपना यथार्थ स्वयं में सिद्ध करना चाहती है, परन्तु विपरीत परिस्थितियों के चलते विरह की पीड़ा को भी सहती जो उसकी नियति बन जाती है और उसके मन का प्रेम मन में ही रह जाता है वहीं अपनी कहानियों में पत ने पति–पत्नी के सम्बंधों को दर्शाया और संस्कार रूपी सामाजिक यथार्थ को भी दर्शाया है। 'दम्पति' और अवगुण्ठन भी पंत जी की कहानियाँ है, जिसमें उन्होंने पत्नी के चरित्र को उजागर किया है। इस कहानी में व्यक्ति के संस्कारों, जर्जर सामाजिक रूढ़ियों, व्यवहार शून्य सैद्धान्तिक मान्यताओं एवं नारी के स्वतंत्र आत्म–प्रबुद्ध व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। छाया एकांकी में लोक कल्याणोन्मुख सामूहिक जीवन एवं बंधन–मुक्त प्रीति की व्यंजना है, मालूम पड़ता है कि पंत के विचारों में एक निरन्तरता बनी हुयी है। वह कहानी, उपन्यास, एकांकी सभी में कहीं न कहीं प्रकट होती है। उनका गद्य साहित्य अधिकांशतः प्रेम एवं सामाजिक विषमता को उद्घाटित करता है।

यदि पंत जी के नारी वर्णन का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि उन्होंने गद्य लेखन में नारी को अपने विचारों से बांध दिया है और सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने उसे मर्यादित आचरण से विभूषित कर दिया तो वहीं दूसरी ओर नारी प्रम पाने को लालायित नजर आती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पंत जी के गद्य साहित्य में नारी के विविध रूप देखने को मिलते हैं। उन्होंने स्त्री के प्रत्येक रूप का वर्णन बहत हीं संजीदगी के साथ किया है

फिर चाहे वह वर्णन माँ का हो या पत्नी प्रेयसी, बालसखा या फिर साहपाठिनी का। उन्होंने जीवन के समस्त सामाजिक सम्बंधों में एवं मनोविज्ञान आदि रूपों में नारी को सजीवता से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (2012) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लोक भारती प्रका"ान, इलाहाबाद पृ.सं. 37–38
2. सत्येन्द्र सिंह (1985) 'प्रसाद निराला पन्त' सरस्वती प्रका"ान मन्दिर इलाहाबाद पृ.सं. 79–80
3. ग्राम्या (2017)–सुमित्रानन्द पन्त पृ.सं. 85
4. गोविन्द पाण्डेय सरस्वती (2017) 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य इतिहास' अभिव्यक्ति प्रका"ान इलाहाबाद पृ.सं. 109–110
5. डॉ. रामप्रवे"ा सिंह–हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.स. 23–24
6. श्री रामचरित मानस–गोस्वामी तुलसीदास, श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार, मुम्बई पृ.सं. 79–80
7. केदारसिंह (1989) उदयाचल, पुनरावृत्ति, पृ.सं. 46–47